निजानन्द—स्वामी

श्री जगदीशचन्द्र आहूजा--इन्चोली

हम भारतवर्ष में जब विभिन्न धर्मों के साहित्य का अवलोकन एवं अध्ययन करते हैं तो देखते हैं कि बड़े-बड़े ज्ञान दर्शाने वाले हुये हैं और आज भी हैं परन्तु इस मिथ्या जगत अपरा शक्ति से पार ले जाने का ज्ञान तो केवल श्री निजानन्द स्वामी के तारतम ज्ञान के बिना न किसी के पास था, न है और न होगा अतः यह आवश्यक हो जाता है कि पहले हम श्री निजानन्द स्वामी को जानने का प्रयत्न करें। किसी को समझाने से पूर्व उस ज्ञान लाने वाले को समझे बिना हम उस ज्ञान को अपनी अपनी अकल से समझने की कोशिश करते हुए जुदा जुदा हो जाते हैं।

श्री निजानन्द सम्प्रदाय के ग्रंथ "श्री मूल बीतक" से स्पष्ट होता है कि असोज सुदि चौदस १६३८ में मारवाड़ उमरकोट गाँव में श्री मत्तू मेहता-कुंवरबाई जी के घर एक बालक पैदा हुआ। इस संसार के नक्षत्र और राशि के हिसाब से उस का नाम देवचन्द्र हुआ। उसमें एक महान आत्मा ने प्रवेश किया। उस परमब्रह्म सत्, चित, आनन्द की शक्ति श्यामा जी की आतम प्रगट हुई। तन माया का था जीव का संग होने से वह यह भी भूल गई कि मैं कौन, कहाँ से आई, घर कौन और धनी मेरा कौन है।

ग्यारह वर्ष की आयु होने पर मन में अपने परमात्मा की याद तड़पाने लगी। संसार क्या है? परमात्मा जो सब को जानता है कौन और कहाँ है?

जब भयो बरस अग्यारमां--तब मन उपजो विचार
मैं कहाँ से आया--कहाँ है मेरा भरतार

पूछने पर जगत के लोगों ने अपने मतानुसार बताया

कोई कहे वह घट घट—है व्यापक संसार
तब जाण्या वह निकट—ये ही ग्रहों में सार।

जब वह परमात्मा सर्व व्यापक है तो खोज करना कोई कठिन नहीं--बस--खोज शुरू कर दी। मूर्ति पूजा--मन्दिर में तीन तीन घण्टे दण्डवत परिकरमा के साथ की पर भगवान की प्रतिमा नहीं बोली--तब सोचा बिना सत संग विवेक नहीं होगा। वहाँ कोई साधन नहीं था सो घर छोड़कर खोज पर निकल पड़े। रास्ते में घोर संकटों से बचकर सीधे मार्ग पर लगाने के लिए वह परब्रह्म स्वयं भेष बदल कर आये। शरीर से सिपाही चोर लगते थे-न पहचाना। फिर सोचा वह सर पर हैं मैं ढूंढ़ ही लूंगा।

कच्छ देश में अनेकों मन्दिरों में बड़े-बड़े पण्डितों को कर्मकाण्ड में फंसे देखा। कनफटे

Nijanand App

साधुओं को देखा जो राजगुरु थे और सारी जनता वहाँ जाती थी पर वहाँ भी पाया कि रिद्धी सिद्धी से लोगों को शारीरिक सुखों का ही प्रलोभन दिया जाता था--फिर संन्यास मत वालों के पास गये। उन्होंने विश्वास दिलाया कि पहले हमें गुरु धारण कर लो हम निश्चय ही परमात्मा का साक्षातकार करवा देंगे। बड़े विश्वास से उन को गुरु धारण किया। अष्टांग योग साधना बड़ी कसनो से की पर यह तो केवल शरीर साधना थी आत्म साधना का मार्ग आत्म ज्ञान के बिना कहाँ से आता वहाँ से छोड़कर भारी खोज में लगे रहे। मुल्ला के पास मसजिद में भी गये--वहाँ भी चौदह अंग पानी से धोकर एक दीवार की तीन महरावे खुदा का घर पुजते देखा सो खोज करते करते भोज नगर आये। वहाँ हरिदास जी राधा वल्लभी मार्ग में श्री बाँके बिहारी और बालमुकन्द जो योग माया परा शक्ति के ब्रह्माण्ड की शक्तियाँ हैं उनकी भक्ति, सच्ची लगन, निस्वार्थ भाव आत्म साधन गर्ज देखी। उनसे मैं यह ग्रहण करूं यह सोचकर एक मात्र गुरु सेवा से ही सब प्राप्ति होगी। सच्चे दिल से, मनसा, वाचा, करमना कोई भी शक न लाकर सेवा के बल से बिना माँगे ही गरु हरिदास जी ने बाँके बिहारी जी का मन्त्र "भज मन श्री वृन्दावन कुंज बिहारो नित्य बिलास" सखी भाव होये भजिये भरतार साधन बताया। बस उस दिन से अपने को एक गोपी मानकर सुमिरन करने लगे। गुरु सेवा ही महान है इस लक्ष से रात रात परिकरमा हरिदास जी के मन्दिर की करते रहे सो गुरु हरिदास जो ने विवश होकर भगवान बालमुकन्द जी को मूर्ति देकर अपने घर मन्दिर बनावें, निर्णय लिया।

बालमुकन्द जी ने जो योग माया परा शक्ति में थे ने गुरु हरिदास जी को बताया कि आपने देवचन्द्र जी को शरीर का शिष्य बनाया है, इनकी आत्मा तो राधिका रानी बाँके बिहारी जी की है जिन को हम नित्य प्रणाम करते हैं--वह मालिक हैं, हम तो इनके अहसान नहीं उतार सकते। आप इनको बाँके बिहारी जी के बागा वस्त्र सेवा के लिये दे देना नहीं तो हम फिर कभी दर्शन नहीं देंगे-यह दर्शन भी देवचन्द्र जी के कारण से आप को हुए। श्री हरिदास जी चौंक गये--देवचन्द जी के चरणों में गिरकर अपनी भूल मानी और उस दिन से देवचन्द्र जो बाँके बिहारी जी के वस्त्र सेवा अपने को राधिका रानी के भाव से करते--भोग अपने हाथों बनाकर चितवन करते। एक दिन साक्षात योग माया के ब्रह्माण्ड में जहाँ ब्रज गोकुल, बिन्दावन अखण्ड है राधिका के भाव से श्रीकृष्ण बाँके बिहारी जी के बाल सरूप में चितवन में दर्शन हुए और घुघणियों का प्रशाद जो चितवन में मिला था आँख खुलने पर भोज नगर में ही पत्तल पर पाकर मन को प्रसन्नता और दृढ़ता की सीमा न रही।

अब सोचा यह योग माया का परा शक्ति का ब्रह्माण्ड है, बाल मुकन्द और बाँके बिहारी जी का ज्ञान बिना श्रीमद्भागवत ग्रथ के मिलेगा नहीं सो श्रीमद्भागवत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए जाम नगर (नौतन पुरी) जो राधा वल्लभी मार्ग का मूल स्थान था, वहाँ सपरिवार चले गये। वहाँ श्यामा जी के मन्दिर में काहन जी भट से चौदह वर्ष तक श्रीमद्भागवत सुनी जिससे ज्ञान हुआ कि मनुष्य तन मिला है आत्मा के कल्याण के लिए, आत्मा सत्य है--शरीर नाशवान है। क्षर अक्षर-

Nijanand App

अक्षरातीति के भेद का पता तो चला, चौदह, लोक पाँच तत्व, तीन गुण हैं और महाप्रलय में सब नाश हो जावेंगे सो मुक्ति इस ससार में है ही नहीं।

श्री बाँके बिहारी को ही श्री कृष्ण खावंद मानकर उन्हीं की चर्चा सुनना, भोग लगाना, मनन करना, चितवन करना जीवन का एकमात्र लक्ष बनाने पर भी साक्षात दर्शन नहीं हुये। तब उस मूल धनी परब्रह्म अक्षरातीत जिसको कभी याद ही नहीं किया था, ने सोचा कि अब उन्हें इस अधकार से निकालना चाहिए। यह जिसे पूर्ण ब्रह्म परमात्मा मान बैठे हैं वह बाँके बिहारी अक्षरातीत मूल धनी नहीं, वह तो योग माया में हमारी लीला के हमारे ही अखण्ड किये सरूप हैं। जिस ज्ञान को यह खोज रहे हैं वह ज्ञान ही इस संसार में नहीं है तो इन्हें यह ज्ञान देंगा कौन--अपनी अगना है इस निसबत के कारण यह अब ज्ञान के पात्र हैं सो इन्हे मूल निसबत की पहचान करानो ही होगी। एक दिन श्याम जी के मन्दिर में वह पवित्र दिन और पवित्र घड़ी आ ही गई।

सम्मत १९७८ असोज कृष्ण पक्ष एकादशी के दिन श्याम जी के मन्दिर में जहाँ देवचन्द्र जी श्रीमद्भागवत सुन रहे थे अपने निज सरूप से आवेश लीला का रूप धारण कर साक्षात दर्शन दिये। यह सरूप किशोर अति सुन्दर पर देवचन्द्र जो हैरान हो गये और गद गद हो गये--यही समझा कि यह बाँके बिहारी हैं।

या उपरान्त कृपा भई--
साक्षात दियो दर्शन

उस अक्षरातीत के साक्षात आवेश सरूप ने पूछा क्या मुझे पहचानते हो ? देवचन्द्र जो ने उत्तर दिया मेरा मन कहता है आप मेरे खाविन्द हैं। तो उन्होंने पूछा यदि मुझे खाविन्द कहते हो तो बताओ तुम्हारा घर कहाँ है ? उत्तर दिया मुझे पता नहीं तो फिर मुझे खाविन्द कैसे कहा--खाविन्द की पहचान होने पर क्या घर का पता नहीं होता--देवचन्द्र जी चुप हो गये। फिर पूछा क्या अपने को पहचानते हो ?

तू कौन, आई इत क्यों कर
कहाँ है तेरा वतन
नार तू कौन खसम की
दृढ़ कर कहो वचन

देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया--

इतना ही हम जानत हैं
जो खाविन्द हमारे तुम
खाविन्द भी तो कहया
जो गवाही देई मन

और किसी भी बात का उत्तर नहीं दे सके कि मैं कौन, कहाँ से आई, कहाँ घर, कहाँ कौन धनी श्रीमद् भागवत का इतना मनन करने पर भी यह संशय बाकी रहे--तब वह परब्रह्म अक्षरातीत जो धाम के धनी हैं, उनके आवेश सरूप ने कहा--आओ तो बतावें हम।

तब बताया "निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत" मेरा निजनाम कृष्ण जी अक्षरातीत है तुम्हारा नाम सुन्दरबाई हैं, तुम्हारे शरीर का नाम यहाँ देवचन्द्र है--बृज और रास में तुम्हारे तन का नाम राधिका रानी था, असल घर परम-धाम है--वहाँ तुम श्यामा महरानी हो, मेरे बायें अंग सिंहासन पर विराजमान हो। अपना दोनों का नाम अखंड अक्षरातीत है। मैं अपने वतन का सब ज्ञान और लीलाओं सहित आया हूं जिस से मेरी आत्मायें

Nijanand App

पहचान करेंगो। मैं उन से जुदा हो ही नहीं सकता तभी बिना याद किये मैं तुम्हारे पास आया हूं इस सम्बन्ध के कारण जाहिर मैं अब हुआ हूं दुनिया तो मेरा नाम भी नहीं जानती। वहां इशक रबद से खेल मांगकर तुम ब्रज रास में आये। वहां वहां मैं नन्द के घर अक्षर को आतम पर बैठ कर गोपियों के साथ रहा। अक्षर की इच्छा पूरी करने अखण्ड रास योग माया में रचाई--फिर वहां से तुम्हारी सब आत्माओं के साथ वापस अखण्ड परम धाम गये। तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं हुई थी अतः यह ब्रह्माण्ड तीसरा फिर तुम्हारे वास्ते बनाया। ब्रजरास खेलकर फिर मैं रसूल बन मुहम्मद अरब में कहलाया। कुरान में तुम्हारे और रूहों और जाहिर होने के सब निशान लिखे। तुम्हें ईसा रूह अल्ला दसवीं सदी में आना लिखा है। उसी के हिसाब से साल नौ सौ नब्बे बीतने पर तुम अपनी आत्माओं को लेकर यहां आये हो। वेद, शास्त्र, पुरान, भागव आदि में कृष्ण कृष्ण सब कहते हैं पर भेद कोई नहीं जानता। एक कृष्ण वैकुण्ठ के हैं वह श्री विषणु भगवान हैं--कृष्ण नहीं। दूसरे कृष्ण गौ लोक के हैं वह बांके विहारी हैं। असल में श्री कृष्ण नाम अक्षरातीत का है जो मेरा ही नाम है। अपना घर परम धाम है। अपनी आत्माओं को माया में उन की इच्छा पूरी कर यह सब ज्ञान समझा कर घर ले चलने आया हू। आपको हुकम देता हूं उन्हें यह ज्ञान समझा कर मेरी व निजधर की पहचान करवाओं। यह भागवत ग्रंथ के भेद जो दुनियां नहीं जानती, मेरी पहचान होने पर ही खुल जावेंगे। सत वाणी तो परम धाम का यह ही है--इसकी पहचान के बिना आत्मा जाग्रत नहीं होगी। सब आत्मायें तुम्हारी अग हैं। तुम्हारा नाम सुन्दर बाई है और यह सुन्दर साथ कहलायेंगे। जब देवचन्द्र जी ने यह ज्ञान सुना कि मैं श्यामा हूं तो कहा धनी यदि मैं अगना हूं तो मुझे अविधार लो। तुरन्त धाम धनी ने हाथ आगे फैलाये देव चन्द्र जी चरणों में प्रणाम करते हैं। भागवत का ज्ञान असल पहचान न दे सका अब साक्षात पहचान हो गयी। मैं श्यामा हू यह मेरे धनी हैं। मेरा साथ अभी माया में फंसा है--पूछा, धनी वे साथ कहां है-उत्तर दिया, तुम्हें भी नहीं पता मैं भेजूंगा तमाम माया से निकालकर ग्राम-ग्राम, नगर-नगर जिस-परिवार में जिस तन में आतम है मैं भेजूंगा। अब जो पूछना है पूछ लो, फिर इन नैनों से दर्शन नहीं कर सकोगे। तब पूछा कि धनी कहां जाओगे, आपने तो कहा है मेरा नाता ऐसा है मैं अपनी रूहों से जुदा ही नहीं हो सकता

अन्दर तम्हारे आकार के
आए के बैठे हम

तो धनी फिर क्या पूछना--बस वह अदृष्ट हो हो गये और वह आनन्द, अखण्ड, सुख के दाता जब देवचन्द्र जी के अन्दर विराजमान हो गये तो यह देवचन्द्र जी का शरीर अब किस का हो गया? धनी देवचन्द्र, श्यामा महरानी, ईसा रूह अल्ला निजानन्द स्वामी बन गये। यह तारतम--अपने धनी की पहचान, अपनी पहचान, निजघर की पहचान और हमारे माया में आने का कारण।

विचार करने की बात है, अक्षरातीत ने देव चन्द्र जी को मन्त्र नहीं दिया, दर्शन देकर मिलन किया और निज सरूप की पहचान कराई। कण्ठी नहीं बांधी, गुरु नहीं कहलाये-हम सब को साथ कहा। ऐसे ज्ञान को लाकर अखण्ड सुख देने वाले हमारे मालिक श्यामा जी ही निजानन्द स्वामी हैं-

Nijanand App

इस जगत में जो तन धारण किया इसका नाम श्री देवचन्द्र है ।

अब यदि हम भी यह ज्ञान प्राप्त कर अपने धनी से मिलना चाहते है, निजघर चलना चाहते हैं, अपनी पहचान करना चाहते हैं तो मूल बीतक सुनकर ही अपना नाता धनी के साथ जोड़ो--इसे ही तारतम कहते हैं, खाली कण्ठी से बिना पहचान काम नहीं चलेगा ।

निजानन्द स्वामी का दर्शन

कई कसौटी कसी दुल्हन--
सो भी वास्ते हम सैयन

हमें सब धर्मों की खोज कर करम काण्ड से निकलकर जब तक धनी की पहचान नहीं होगी सब तपस्या, कसनी और भागवत भी व्यर्थ है । अपने धनी के ज्ञान का नाम ही तारतम है जो अंधकार को, भूल को मिटाकर धनी की पहचान कराये । फिर देवचन्द जी ने कभी भागवत नहीं पढ़ी या सुनी । तारतम के बाद पढ़ना अपने को अंधकार में डालना है । वेद की भी जरूरत नहीं । वेद मन्त्र शरुती का यह है--

"अनादा पुरुशस्य अनुभूति अनुवार्य न च वेदं"

व्यास जी ने हरवंश पुराण में कहा है--

"उत्तम पुरुष बिन और को, देवी देव नहीं ध्याय,
अकथ कथा नूतन कहे, जग सुन पूजे ताय ।"

कुरान में भी कहा है

'मोमिन कहिये वा को जो छोड़े चौदे तबक
मा ,सिवा अल्ला के-और करे सब तरक"

गुरु नानक देव जी कहते हैं--

"जाए पुच्छो तिन सुहागनी, किन्नी बाती शौ पाया
नानक धन सुहागनियाँ जिन्दा साहिब नाल प्यार

सुन्दर साथ जो सारा जगत इस नाम, सरूप, धाम और लीला के बिना अधूरा है । शास्त्रों में तीन शक्तियाँ कहीं है, अपरा शक्ति कुल वेद शास्त्र पुराण, गीता और कुल जगत, देवी-देव, यह चौदह लोक, पाँच तत्व, तीन गुण, यह अपरा क्षति है ।

२. परा शक्ति योग माया का ब्रह्माण्ड है जिस का ज्ञान श्री मद्भागवत है, तभी जाग्रत बुद्ध का ज्ञान है जहाँ जाकर अखण्ड होता है, जीव आनन्द का अधिकारी नहीं ।

३. केवल ब्रह्म विद्या जो आज तक आई ही नहीं तो कैसे उस पार ब्रह्म अक्षरातीत, उत्तम पुरुष का ज्ञान कौन कहाँ से लाता ।

सो तो अब जाहिर हुआ खुद धनी धाम अक्षरातीत आये और अपने आनन्द अंग श्यामा महरानी, ईसा रुह अल्ला को यह आनन्द का भण्डार बखशा, उनके अन्दर बैठ खुद कहा । तभी उन्हें निजानन्द स्वामी कहते हैं । वह उस परमधाम जहाँ आत्मा ही केवल अपने पर आतम से आनन्द लेती है, जहाँ धर्म-कर्म, पन्थ का कोई मतलब नहीं इसी से जाहिर है वह अक्षरातीत ही सब का एक धनी, खाविन्द है । हिन्दू या मुसलमान तो शरीर के झगड़े हैं, धर्म की रसमों के झगड़े है, इन सब झगड़ों को मिटा कर एक रस करने की यह शक्ति, यह ज्ञान केवल निजानन्द स्वामी ही लाये हैं, उनके बिना कौन ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेगा, उन्होंने कहा है--

"क्या देखो रे हम दुनियाँ,
जो इन को न करूं अखण्ड"

निजानन्द स्वामी ही आत्म तत्व का ज्ञान लाये हैं । आत्मा सबकी एक है तो फिर जब यह ज्ञान सबके पास होगा तो परमात्मा सब का एक होगा ।

'क्या हिन्दू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावेंइमान'

फिर एक धनी, एक घर, एक निजानन्द होगा

Nijanand App

यह है श्री निजानन्द स्वामी के दर्शन और इसी सम्प्रादय है।
लिए हमारे सम्प्रदाय का नाम भी निजानन्द बोलो श्री निजानन्द स्वामी की जय

●

वन्दना

कृष्णलाल (मुजफ्फर नगर)

हे प्राणों के हो प्रीतम तेरी अंगना करे पुकार
पिया ले चलो पार के पार

१. मैं अंगना हो तुम मेरे स्वामी
तेरी लीला किसी ने न जानी
जिस हाल में राखो पिआ जी हमें हर पल है स्वीकार
पिया ले चलो ....

२. है परम धाम जो न्यारा कब देखेंगी वो नजारा
है आस यही फरियाद यही, बस न करना इन्कार.....
पिया ले चलो ....

३. नित तेरा ही दर्शन पायें, नित जमना जी में नहायें
यही अर्जी लेकर आई हैं, मिलता रहे तेरा प्यार.....
पिया ले चलो ....

●

Nijanand App